अध्याय सोलह

चिकित्सा तथा जन-स्वास्थ्य सेवाएं

जन्म-मरण के आंकड़े

वर्ष 1869 से 1880 की अवधि के दौरान वार्षिक मृत्यु संख्या औसतन 19,351 अभिलिखित की गई थी, जिससे औसत मृत्यु-दर 20.74 व्यक्ति प्रति हजार हुई। अन्तिम पांच वर्षों की अवधि का औसत तो 29,781 से कम नहीं रहा (जिससे मृत्यु दर 31.9 प्रति हजार होती है) तथापि 1879 में अत्यधिक मौतें होने के कारण इसमें काफी वृद्धि हो गई जब 56,300 व्यक्तियों की मृत्यु दर्ज की गई, इनमें से प्राय: 27,000 लोगों की मृत्यु केवल ज्वर के कारण हुई थी। अगली दशाब्दी में मृत्यु-दर का औसत 32.1 प्रति हजार रहा और 1891 से 1900 तक यह लगभग उतनी ही रही अर्थात् औसत दर 32.01 रही। यदि 1892 तथा 1894 में शिशुओं की बहुत ज्यादा मौतें न हुई होतीं और अगले वर्ष इन्फ्लुएंजा महामारी न फैली होती तो मृत्यु-दर काफी कम रही होती, नवजात शिशुओं की संख्या दर्ज मृत्यु संख्या से कहीं अधिक रही, 1891 से 1900 के बीच औसत जन्म-दर 40.31 प्रति हजार रही। 1892 और 1894 में जन्म की अपेक्षा मौतें अधिक हुईं। 1894 में, जिस वर्ष पानी लगातार बरसता रहा मृत्यु-दर सबसे अधिक अर्थात् 47.12 रही और ज्वर से अत्यधिक मौतें दर्ज की गईं। 1901 से 1904 तक मृत्यु-दर सामान्यत: लगभग 30 व्यक्ति प्रति हजार रही, केवल वर्ष 1903 को छोड़कर जब वह बढ़कर 47.5 प्रति हजार हो गई थी, जिसका कारण कुछ तो ज्वर का बारम्बार प्रकोप होना और कुछ जिले में भयंकर प्लेग फैलना था। 1917 से 1921 तक के पांच वर्षों में मृत्यु-दर बढ़कर 54.35 प्रति हजार हो गई जिसका कारण ज्वर और इन्फ्लुएंजा के कारण बहुत अधिक संख्या में हुई मौतें थीं। 1918 में यह दर अधिकतम अर्थात् 79.61 थी। 1918 से 1921 के बीच जन्म की अपेक्षा मौतें अधिक हुईं। पूरे जिले तथा ग्रामीण और नागर क्षेत्रों में पिछली तीन दशाब्दियों में जन्म तथा मृत्यु की दरों का दसवर्षीय माध्य निम्नलिखित हैं :

जनसंख्या	जन्म-दर का दसवर्षीय माध्य			मृत्यु-दर का दसवर्षीय माध्य		
	1941–50	1931–40	1921–30	1941–50	1931–40	1921–30
योग ..	23.1	33.5	35.3	16.0	22.9	25.0
ग्रामीण ..	22.4	33.5	33.5	15.7	22.8	25.4
नागर ..	31.2	33.4	24.3	20.1	23.2	19.6

1948 से 1957 तक के दस वर्षों में, मृत्यु-दर असामान्य रूप से कम रही, औसत 6.13 (1954 में) से 14.85 (1948 में) के बीच रहा। अध्याय तीन में दिए गए प्रथम सांख्यकीय विवरण में दिखाया गया है कि पिछली पांच दशाब्दियों में जनसंख्या में घट-बढ़ होती रही और 1901 से 1920 तक की अवधि में यद्यपि राज्य की जनसंख्या में केवल 4.0 प्रतिशत की ही कमी हुई, जिले की जनसंख्या में 7.3 प्रतिशत की कमी हुई।

ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त अवधि में महामारियों से जिनमें (1918–19 की इन्फ्लुएंजा की बीमारी भी सम्मिलित है) इस जिले को शेष राज्य की सामान्य क्षति की तुलना में बहुत ही अधिक क्षति उठानी पड़ी; 1917 से 1921 तक के पांच वर्षों में मृत्यु की दर का औसत 54.35 प्रति हजार हो गया था और 1918 में मृत्यु-दर अधिकतम अर्थात् 79.16 थी। 1931 की जनगणना से विदित हुआ कि जिले की जनसंख्या 1881 की तुलना में 21.8 प्रतिशत अधिक हो गयी थी और यह मंडलीय (Divisional) औसत से काफी अधिक और राज्य के औसत से थोड़ी अधिक थी। 1921–30 की दशाब्दी में प्रति वर्ष मरने वालों की संख्या से जन्म-संख्या अधिक रही और इस प्रकार जन-संख्या में वृद्धि का कारण पूर्णतया प्राकृतिक रहा। 1931–40 की अवधि में जिले की जनसंख्या में वृद्धि राज्य के औसत से कम रही। 1951 में जिले की जनसंख्या पिछले 50 वर्ष पूर्व की जनसंख्या से 17.4 प्रतिशत अधिक थी, ग्रामीण जनसंख्या में 16.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी और नगरों की जनसंख्या में 32.4 प्रतिशत और इसकी तुलना में इसी अवधि में राज्य की जनसंख्या में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।